ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-11*December- 2021
Innovation The Research Concept

हिन्दी साहित्य के विकास में मिथक की भूमिका
Role of Myth in The Development of Hindi Literature

Paper Submission: 15/12/2021, Date of Acceptance: 21/12/2021, Date of Publication: 23/12/2021

राखी उपाध्याय
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
डी.ए.वी. (पी.जी.)
कॉलेज, देहरादून, भारत

विदेवन
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
डी.ए.वी. (पी.जी.)
कॉलेज, देहरादून, भारत

सारांश

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के इस युग में तर्क प्रधान समाज निरन्तर विकास से भले ही भूमण्डलीय आधार पर एक विश्वग्राम के रूप में परिवर्तित हो गया है, किन्तु भौतिकवादी जीवनशैली के कारण मनुष्य का अपनों से सामाजिक-सांस्कृतिक पार्थक्य बढ़ता ही जा रहा है। भौतिक सुख-संसाधनों को ही विकास का पर्याय मान लेने और अलगाव भरी जीवनचर्या से मानव मानसिक परितोष हेतु जीवन के अन्त में भटकता है, तथाकथित विकास की चरमसीमा के पश्चात इन वस्तुओं से उसका मोहभंग होने पर वह जीवन के वास्तविक-मौलिक सुख को खोजता है, जो उसके आदिम-समाज का मूल स्वभाव एवं अभिन्न अंग होने से मिथकों में प्राप्त होता है। हिन्दी साहित्य की आधुनिक कविता में नवीन युगबोध से सम्पृक्त उल्लेखनीय मिथकीय काव्यकृतियों ने समाज की समस्याओं पर चिन्तन मनन कर उनकी सोच को परिष्कृत कर व्यष्टि से समष्टि की ओर उन्मुख 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' वाली कल्याणकारी भावना से जोड़ा है।

In this age of science and technology, the rational society may have been transformed into a world village on a global basis due to continuous development, but due to the materialistic lifestyle, the socio-cultural separation of man from his loved ones is increasing. Taking material pleasures and resources as the synonym of development and alienating lifestyle, man wanders at the end of life for mental gratification, after his disillusionment with these things after the climax of so-called development, he searches for the real-original happiness of life,Which is obtained in the myths due to its basic nature and integral part of the primitive society. In the modern poetry of Hindi literature, remarkable mythological poetic works related to the new era have contemplated on the problems of the society and refined their thinking and linked them with the welfare spirit of 'Sarve Bhavantu Sukhinah' oriented from individual to collective.

मुख्य शब्दः आदिमानस, युगबोध, तार्किक, पौराणिक, सृजनशीलता, प्रकृति, व्यष्टि-समष्टि, चिन्तन-परम्परा

Keywords: Primitive, Epoch-Making, Logical, Mythological, Creativity, Nature, Individual-Mass, Thinking-Tradition.

प्रस्तावना

उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्व तक मिथक को कपोल कल्पना समझा जाता था, लेकिन 19वीं शताब्दी में ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में वैज्ञानिक दृष्टि के विकास के साथ मिथकों के बारे में नवीन दृष्टि का उदय होता है। नृविज्ञान, समाजशास्त्र, भाषाशास्त्र, मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र तथा लोकवार्ता आदि ने इन आदिम कथाओं में विशेष रूचि दिखाई तथा उनमें नवीन मूल्यवत्ता का अन्वेषण किया। मिथक उतना ही प्राचीन है जितना कि मानव जाति। मानव जाति के आरम्भकाल में जब भारत में सृष्टि को देखने तथा समझने की दृष्टि उत्पन्न हुई तो इन कथाओं ने जन्म लेना आरम्भ किया। प्रकृति के विभिन्न तत्वों यथा सूर्य, चन्द्र, आकाश, पृथ्वी, पर्वत, सागर, सरिता, प्रकृति की विभिन्न घटनाओं यथा वर्षा, प्रभंजन, भूकम्प, जल प्लावन, मानव जीवन की की विभिन्न घटनाओं यथा मृत्यु, जन्म, महामारी, आपदा आदि के बारे में आदि मानस की अवधारणाओं तथा तत्सम्बन्धी हर्ष, भय, विषाद, कौतूहल, आश्चर्य एवं कल्पना आदि भावों की अभिव्यक्ति मिथक के माध्यम से हुई है। इस प्रकार मिथक मानव के सम्पूर्ण बाह्य जगत को अपने में समाहित किये हुए हैं।

परिभाषा

मिथक में जो 'मिथ' शब्द है, वह विचारणीय है, भारतीय दृष्टि जिसे पुराण कहती है, उसे पाश्चात्य दृष्टि 'मिथ' कहती है, "'बृहत अंग्रेजी कोश' में 'मिथ' पुराणकथा, पौराणिक आख्यान, दन्तकथा, पुराण, पुराकृत कथा, प्रतीक कथा, कल्पित कथा, काल्पनिक कथा, कल्पित वस्तु या व्यक्ति, काल्पनिक वस्तु या व्यक्ति कथा है।"[1] जबकि एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के अनुसार, "'मिथ' को पवित्र इतिहास का वृत्तान्त प्रस्तुत करने वाली रचना कहा गया है, आदिकाल में घटित घटना का इतिहास सामान्य इतिहास से सम्बन्धित न होकर 'परा इतिहास' अथवा इतिहास-अतीत होने की प्रवृत्ति रखता है इसीलिए इसे पवित्र इतिहास की संज्ञा देना उचित समझा गया है।"[2] विदित हो कि हिन्दी नागरी प्रचारणी कोश में- आपस में, एकान्त में, गुप्त रूप से वार्ता, मिथक का अर्थ अंकित है।

हिन्दी साहित्य एवं मिथक

हिन्दी साहित्य की आधुनिक कविता काव्यधारा में मिथकों को युगबोध से सिंचित कर कवियों ने उन्हें वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिक बना दिया है। भले ही साहित्य के सभी युगों, चरणों में मिथक अपनी उपस्थिति से साहित्यकारों की लेखनी को ऊर्जादायिनी शक्ति प्रदान करता रहा है, किन्तु आधुनिक हिन्दी कविता में इसका प्रसार एवं प्रभाव निरन्तर प्रगतिगामी रहा है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से खड़ी बोली अपनी सहबोली ब्रजभाषा के वर्चस्व को प्रतिस्थापित कर हिन्दी साहित्य की गद्य तथा पद्य दोनों प्रारूप में सर्वस्वीकार्य मानक एवं परिष्कृत भाषा बनी और द्विवेदी जी के दोनों शिष्यों अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के माध्यम से खड़ी बोली में हिन्दी का प्रथम महाकाव्य 'प्रियप्रवास' एवं मैथिलीशरण गुप्त के माध्यम से स्त्री विमर्श पर आधारित 'साकेत' महाकाव्य जनता के सम्मुख प्रस्तुत किया। 'साकेत' के नवम् सर्ग में उर्मिला की पीड़ा को उजागर कर मिथक को नवीन युग धर्म से जोड़ते हुये सार्थक आयाम प्रस्तुत किये और 'साहित्य समाज का दर्पण है' कि उक्ति को चरितार्थ करते हुए साहित्य में मिथक की सशक्त भूमिका सिद्ध की।

साहित्य में मिथक को युगधर्म से सिंचित कर प्रस्तुत करने की ही वह कला सार्थक हुई जब तुलसीदास जी के नेतृत्व में भक्तिकाल से 'अवधी' बोली में लिखी जा रही 'राम काव्यधारा' एवं सूरदास जी के मार्गदर्शन में ब्रजभाषा में लिखित व आगे बढ़ रही 'कृष्ण काव्यधारा' के वर्चस्व को थामकर 'खड़ी बोली' को सरस एवं लोकप्रिय सिद्ध करने का कार्य मिथकों ने किया। मिथकों की इस सशक्त युग परिवर्तनकारी सृजन क्षमता को चिह्नित कर उसका आँचल पकड़कर तत्कालीन एवं उत्तरवर्ती साहित्यकारों ने सशक्त शाब्दिक विन्यास एवं माधुर्यतायुक्त संस्कृतनिष्ठ भाषा के शब्द साहचर्य को अपनाकर परिष्कृत तथा मानक हिन्दी के रूप में खड़ी बोली को पदारूढ़ किया। जिसे आगे चलकर छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता एवं समकालीन कविता के विविध चरणों में उत्तरोत्तर स्वीकार्यता मिलती गई। स्वतन्त्रता के पश्चात यही परिमार्जित् खड़ी बोली हिन्दी देश की राजभाषा बनी।

'छायावाद' में जयशंकर प्रसाद (कामायनी), सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला (राम की शक्ति पूजा), 'छायावादोत्तर काल' में रामधारी सिंह दिनकर ('कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी', 'उर्वशी'), 'नयी कविता' में धर्मवीर भारती ('अन्धायुग', 'कनुप्रिया'), कुँवर नारायण ('आत्मजयी', 'वाजश्रवा के बहाने'), नरेश मेहता ('संशय की एक रात', 'महाप्रस्थान'), दुष्यन्त कुमार ('एक कण्ठ विषपायी') एवं जगदीश चतुर्वेदी ('सूर्यपुत्र') प्रमुख मिथकीय प्रबन्ध काव्यकार हैं, जिन्होंने प्राचीन पौराणिक मिथकों को नवीन सन्दर्भों में प्रस्तुत कर चिरकालीन समस्याओं पर सोचने एवं तत्पश्चात् निर्णायक समाधान खोजने हेतु समाज को विवश किया है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के तार्किक युग में इन प्रबन्धकाव्यों (महाकाव्यों एवं खण्डकाव्यों) की लोकप्रियता मिथक की सृजनशीलता एवं चिर उपयोगिता का प्रमाण प्रस्तुत करती है।

"हिन्दी कविता के लिए 'मिथक' शब्द पूरी तरह आधुनिक है। यह सन् 1950 के बाद नयी कविता में सृजन के एक विशिष्ट उपादान की तरह प्रयुक्त होने लगा, नये कवियों ने अपनी प्रबन्ध रचनाओं में मिथकों का विनियोजन अपरिभाषेय संवाहकता के साथ किया। नये कवियों को अनुभव हुआ कि कविता के पुराने उपादान समय के भीतरी यथार्थ के अति संकुल और संश्लिष्ट रूपों को सही-सही अभिव्यक्त करने में समर्थ नहीं हो पा रहे हैं। समाज के भीतरी मन की अभिव्यक्ति के लिए नये कवियों को द्वंद्वात्मक चिन्तन प्रक्रिया से गुजरना पड़ा। उन्होंने व्यक्तियों, वस्तुओं तथा समकालीन घटनाओं को विश्वसनीय आकार देने के लिए बहुस्तरीय अर्थ-संदर्भों की तलाश करना शुरु किया। इसी अन्वेषण-प्रक्रिया में उनकी दृष्टि पुराकथाओं पर पड़ी। इन नये कवियों ने पौराणिक कथाओं को काव्य सृजन का आधार बिन्दु मानकर अपने समय की प्रभीतिकर समस्याओं से जूझने, विघटित होते आदमी को बचाने और संक्रमणशील स्थितियों को इतिहास की वास्तविकताओं से जोड़ने का रचनात्मक अभियान चलाया। नये कवियों का यह नया प्रत्याभिज्ञान था और हिन्दी कविता का यह नया प्रत्यय था, जिसे मिथक कहा गया।"[3]

नयी कविता एवं मिथक

अपने सशक्त नाट्य काव्य 'अन्धायुग' में धर्मवीर भारती ने महाभारतीय कथ्य संदर्भ के माध्यम से युगीन सम्वेदना को अभिव्यक्त किया है। 'महाभारतीय धृतराष्ट्र' अन्धा है, जो जगत की समस्त प्रक्रिया को अपने अन्धेपन से नियोजित एवं संचालित करना चाहता है। युग की वास्तविकता को कवि ने इसी फलक पर व्यक्त किया है, कवि की उद्घोषणा को यह काव्यांश प्रमाणित करता है-

"युद्धोपरान्त/यह अन्धायुग अवतरित हुआ/जिसमें स्थितियाँ, मनोवृत्तियाँ, आत्माएँ सब विकृत हैं।

है एक बहुत पतली डोर मर्यादा की/पर वह भी उलझी है दोनों ही पक्षों में

सिर्फ कृष्ण में साहस है सुलझाने का/वह है भविष्य का रक्षक, वह है अनासक्त

पर शेष अधिकतर है अन्धे/पथभ्रष्ट, आत्महारा, विगलित/अपने अन्तर की अन्धगुफाओं के वासी

यह कथा उन्हीं अन्धों की है/या कथा ज्योति की है, अन्धों के माध्यम से।"

"महाभारत काल में जो घटनाएँ एवं स्थितियाँ थी, वे आज भी वर्तमान है अपेक्षतया अधिक विकृत। ये स्थितियाँ ही कवि की प्रेरणा का उपादान बनी है।"[5]

भारतीय दार्शनिक चिन्तन परम्परा की अपनी विशिष्ट कृति 'आत्मजयी' में कवि कुँवरनारायण ने सभी प्रकरणों को साँस्कृतिक एवं दार्शनिक स्तर पर उठाया है। कवि की स्वीकारोक्ति है- "आत्मजयी में उठायी गयी समस्या मुख्यतः एक विचारशील व्यक्ति की समस्या है- केवल ऐसे प्राणी की नहीं जो दैनिक आवश्यकताओं के आगे नहीं सोच पाता। कथानक का नायक नचिकेता मात्र सुखों को अस्वीकार करता है, तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति भर ही उसके लिए पर्याप्त नहीं। उसके अन्दर वह जिज्ञासा है जिसके लिए केवल सुखी जीना काफी नहीं है, सार्थक जीना जरूरी है।"[6]

"सम्पूर्ण बोध/हो चुका काल को जो अर्पित/जीवन में वापस आया/ वह शोधित प्रसाद/मैं,

सभी दिशाओं में प्रतिक्षय/ उत्पन्न / विभाषित / आरम्भित / अनुसृष्ट नहीं-स्रष्टा स्वरूप

लाखों निर्माणों में गलता-ढलता/ कोई अव्यय भविष्य.../मैं जागृत हूँ/मैं जागृत हूँ।"[7]

"जीवन की सार्थकता दुख भोग नहीं प्रत्युत किसी अमर अर्थ में जी सकने में है, जीवन की इसी सच्चाई का समर्थन आत्मजयी में हो पाया है।"[8] वस्तुतः कवि का उद्देश्य जीवन की सार्थकता के इसी रहस्य को खोजना रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य

हिन्दी नई कविता मिथकीय उप काव्यधारा के विकास में धर्मवीर भारती एवम् कुँवर नारायण की योगदान का तुलनात्मक अध्ययन

निष्कर्ष

वास्तव में मिथकों की समाज के निर्माण एवं समुचित दिशा में पथ प्रदर्शन में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वह टूटते समाज को जोड़ता है, एकल को समग्र बनाता है, हिन्दी के नये कवियों ने प्राचीन मिथकों का आश्रय लेकर उन्हें नवीन सम्बन्धों में तत्कालीन समाज की परिवेशगत समस्याओं को सुलझाने का सफल प्रयास किया है। मिथक मस्तिष्क से अधिक हृदय को प्रभावित करता है, जिससे व्यक्ति भौतिक के स्थान पर आत्मिक सुख या चिरकालीन हृदयगत वास्तविक सुख को प्राप्त करता है। स्पष्ट है कि निश्चित रूप से साहित्य सृजन में मिथकों की भूमिका उल्लेखनीय है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *शर्मा, डॉ. दिनेश, "मिथक और दिनकर", पृष्ठ- 18, 'बृहत् अंग्रेजी हिन्दी कोश', पृष्ठ- 1193 से उद्धृत अंश (नई दिल्ली: नमन प्रकाशन, 2006), पृष्ठ- 18*
2. *शर्मा, डॉ. दिनेश, "मिथक और दिनकर", 'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका', भाग-4, (1952) से उद्धृत अंश (नई दिल्ली: नमन प्रकाशन, 2006), पृष्ठ- 18*
3. *कुमार, डॉ. रश्मि, 'नयी कविता के मिथक काव्य', प्रथम सं. (नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2000) पृष्ठ- 9*
4. *भारती, डॉ. धर्मवीर, 'अन्धायुग', 47वाँ सं. (इलाहाबाद: किताब महल, 2015) पृष्ठ- 12*
5. *गुप्त, डॉ. उमाकान्त, 'नयी कविता के प्रबन्ध काव्य शिल्प और जीवन-दर्शन', द्वितीय सं0, (नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2000) पृष्ठ- 64-65*
6. *नारायण, कुँवर, 'आत्मजयी', दशम सं. (नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, 2015), पृष्ठ- 5*
7. *नारायण, कुँवर, 'आत्मजयी', दशम सं. (नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, 2015) भूमिका से उद्धृत अंश, पृष्ठ-5*
8. *गुप्त, डॉ. उमाकान्त, 'नयी कविता के प्रबन्ध काव्य और जीवन-दर्शन', द्वितीय सं0 (नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2000), पृष्ठ- 69 में बल भीमराज गोरे कृत 'हिन्दी के बहुचर्चित प्रबन्ध काव्य: नये सन्दर्भ', पृष्ठ- 65 से उद्धृत अंश*